# विश्वविद्यालय कुलगीत

बाधायें आती है आयें
घिरे प्रलय की घोर घटायें
पावों के नीचे अंगारे
सिर पर बरसे यदि ज्वालायें
निज हाथों से हॅसते हॅसते
आग लगाकर जलना होगा,
कदम मिलाकर चलना होगा।

हास्य रूदन में तूफानों में
अमर असंख्यक बलिदानों में,
उद्यानों में, वीरानों में,
अपमानों में, सम्मानों में,
उन्नत मस्तक, उभरा सीना
पीड़ाओं मे पलना होगा
कदम मिलाकर चलना होगा।

उजियारे में, अंधकार में,
कल कछार में, बीच धार में,
घोर घृणा में, पूत प्यार में,
क्षणिक जीत में, दीर्घ हार में
जीवन के शत शत आकर्षक
अरमानों को दलना होगा
कदम मिलाकर चलना होगा।

कुश कॉटों से सज्जित जीवन
प्रखर प्यार से वंचित यौवन,
नीरवता से मुखरित मधुवन
परहित अर्पित अपना तनमन
जीवन को शत शत आहुति में
जलना होगा–गलना होगा
कदम मिलाकर चलना होगा।